अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2016) | दिनांक 20.12.2016

चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

लघुदण्डक – 30

प्र.1 कोई चार द्वार लिखें – 20

(क) पर्याप्ति द्वार (ख) प्राण द्वार (ग) उत्त्पत्ति द्वार (घ) इन्द्रिय द्वार

(ङ) स्थिति द्वार में से देवों की स्थिति लिखें।

(च) अवगाहना द्वार में से मनुष्य की अवगाहना लिखें।

प्र.2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) गति आगति द्वार को प्रारंभ से लेकर देवों की गति आगति तक लिखें।

(ख) स्थिति द्वार में से मनुष्य की स्थिति लिखें।

(ग) आहार द्वार।

(घ) नारकी की अवगाहना।

(ड.) संहनन द्वार।

(च) समुद्घात–असमुद्घात, मरण द्वार।

पांच ज्ञान – 30

प्र.3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 24

(क) व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह, ईहा, अवाय व धारणा को परिभाषित करते हुए प्रतिबोधक दृष्टांत लिखें

(ख) वर्धमान व हीयमान अवधिज्ञान का पूर्ण वर्णन करें।

(ग) मनःपर्यव ज्ञान के विषय द्रव्यतः व क्षेत्रतः का पूर्ण वर्णन करें।

(घ) दृष्टिवाद उपदेश, सम्यक् श्रुत, मिथ्या श्रुत तथा दूसरी दृष्टि से – सम्यक्दृष्टि का स्वामी.....तक पूर्ण वर्णन लिखें।

(ङ) गमिक श्रुत, अगमिक श्रुत, अंगप्रविष्ट श्रुत, अनंगप्रविष्ट श्रुत का वर्णन करते हुए मतिज्ञान व श्रुतज्ञान में क्या भेद है? यंत्र के माध्यम से समझाऐं।

(च) अवधिज्ञान के विषयों का उल्लेख करें।

प्र.4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें – 6

(क) नपुंसक लिंग सिद्ध किसे कहते हैं?

(ख) व्यंजन अक्षर का क्या तात्पर्य है?

(ग) पारिणामिकी बुद्धि किसे कहते हैं?

(घ) क्या मनःपर्यवज्ञान का स्वामी कोई भी सामान्य आयुष्य वाला हो सकता है?

(ङ) अनादि श्रुत व अपर्यवसित श्रुत का क्या अर्थ है?

(च) पांच अनुत्तर विमान के देवों का अवधिज्ञान कितना होता है?

(छ) अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान के कितने प्रकार हैं? नाम लिखें।

(ज) अप्रतिपाति व अवस्थित अवधिज्ञान का क्या अर्थ है?

(गुणस्थान – दिग्दर्शन) गीतिका – 10

प्र.5 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें – 8

(क) ''कषाय नवमां.....देखो रे।।'' (ख) ''मोह कर्म.....समाधो रे।।''

(ग) ''संपराय में.....पेखो रे।।'' (घ) ''आयु बंध.....कहीजै रे।।''

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें – 2

(क) क्षपक श्रेणी वाला जीव किस गुणस्थान में वेदों को किस क्रम से क्षीण करता है?
(ख) बारहवें गुणस्थान में किन–किन कर्मों का क्षयोपशम निष्पन्न भाव होता है?
(ग) किन–किन कर्मों का बंध नवें व दसवें गुणस्थान तक होता है?

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 30

प्र.7 सभी प्रश्नों के उत्तर देने अनिवार्य हैं –

(क) पच्चीस बोल – संवर 'अथवा' आश्रव के प्रथम पन्द्रह भेद लिखें। 3

(ख) चतुर्भंगी – पन्द्रहवां बोल 'अथवा' सत्रहवां बोल की चतुर्भंगी लिखें। 2

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा – नौ से चौदह गुणस्थान 'अथवा' नौ से चौदह दण्डक की चर्चा लिखें। 2

(घ) तत्त्व चर्चा – विविध विषयों पर छह द्रव्य नौ तत्त्व 'अथवा' छह द्रव्यों पर छह में नौ की चर्चा। 3

(ड.) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) – सामान्य गुण के प्रकारों को अर्थ सहित लिखें। 'अथवा' द्रव्य क्षेत्र काल भाव गुणद्वार के आधार पर आश्रव, संवर व निर्जरा का पूर्ण वर्णन करें। 3

(च) प्रतिक्रमण – प्रायश्चित सूत्र को प्रारंभ करते हुए सुए सामाइए के पहले तक लिखें। 'अथवा' वंदना सूत्र को प्रारंभ से लिखते हुए खामेमि खमासमणो के पहले तक लिखें। 3

(छ) कर्म प्रकृति – प्रत्येक प्रकृति के प्रथम् चार भेद को व्याख्या सहित लिखें। 'अथवा' स्थावर दशक के अंतिम चार दशक व्याख्या सहित लिखें। 3

(ज) बावन बोल – सम्यक्त्व मिथ्यात्व कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? 4

'अथवा'

संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?

(झ) इक्कीस द्वार – कोई एक बोल लिखें – 4

(i) अचरम (ii) असंज्ञी।

(ञ) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खंड) – सामायिक प्रतिमा व श्रमणभूत प्रतिमा।

'अथवा'

दव देवो.....तुम एक। तथा

चोर हिंसक.....धर्म वेश। 3